RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-07
July-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

पंडित लखमीचन्द के लोक साहित्य में विनय और उपासना

Dr.Lajvanti

Assistant professor of Hindi, Government College Kosli, Haryana

व्यक्तित्व :

पंडित लखमीचन्द अपने समय के हरियाणा के सर्वाधिक लोकप्रिय एवं बहुचर्चित व्यक्ति थे । उनका नाम हरियाणा के लोकमानस में इस कदर रस–बस गया था कि आज भी ग्रामीण भाईयों को उनके द्वारा रचित भजन एवं रागनियाँ स्मरण हैं । हरियाणा के लोग खेतों, खलिहानों, चौपालों मेलों और अनेक सामाजिक पर्वो एवं तीज त्यौहारों के अवसर पर इन रागनियों और भजनों को गा–बजाकर अपार आनंद की अनुभूति करते हैं । भोली–भाली ग्रामीण जनता यह सोच भी नहीं सकती कि लखमीचन्द के इन रसिक एवं ज्ञान से ओत–प्रोत भजनों व रागनियों का कोई अन्य विकल्प भी हो सकता है । पंडित जी की किसी भी रागनी का सुमधुर आलाप उनके हृदय को रसप्लावित कर देता है । हरियाणा की जनता उन्हें सुनकर झूम उठती है। यद्यपि उनका स्वर्गवास हुए लगभग पचहतर वर्ष हो चुके हैं परंतु हरियाणवी जनमानस पर उनकी याद आज भी ताजा है ।मनुष्य संसार और संसार के सुखों में लिप्त रहना चाहता है। यही रागात्मिकता की वृत्ति मनुष्य को न जाने कहाँ–कहाँ धक्के खिलाती है, यही वह स्थल है जहाँ मनुष्य को ईश्वर भक्ति की आवश्यकता होती है। मनुष्य ही यही रागात्मिकता की वृत्ति इसी ईश्वर की विनय और उपासना में प्रवृत्त हो जाती है।

विनय और उपासना

पंडित लखमीचन्द के लोक साहित्य में विनय और उपासना का सुन्दर पुट मिलता है। इन्होंने अपने काव्य में अनेक देवी–देवताओं की उपासना तथा प्रार्थना की है।इन्होंने माता भवानी की विनय पूर्वक प्रार्थना इस प्रकार से की है।

कारज सारिए री, सुरती तेरे चरण मैं लागी।
तेरा तो बोहत घणा सै ढेठ, मार दिए असुर गए जो फेर
हाजिर लिए खड़या तेरी भेंट,
मनै तूं पुचकारिए री, यो तेरा भक्त रटै मंद भागी ञ[1]

लखमीचन्द ने माता भवानी के साथ–साथ ब्रजराज कृष्ण भगवान को भी पुकारा है और उनका यशगान किया है जो इस प्रकार से है:–

श्रीकृष्ण जी महाराज आज्या, पृथ्वी के सरताज आज्या।
गोकुल के ब्रजराज आज्या, भारत के मैदान मै ञ
जती मर्द रहे ना सती बहू बिकण लगे हाड मांस और लहू।
गऊ मिश्री कूजा हुआ करै थी, सारे जग बूझा हुया करै थी।
घर–घर पूजा हुआ करै थी, सारे हिन्दुस्तान मैं
करण लागे आपस के मै बैर, घर–घर बह पाप की नहर।
पैर पद्म सिर मुकुट विराजै, कांधे मूंज जनेऊ साजै।
शंख घड़ियाल घंटा बाजै, घोर सुणै असमान मै
थारे बिन हो र्या सै बुरा हाल, करो कुछ भक्तों की प्रतिपाल।बाल जती इच्छा के भोगी, समदर्शी साधन के योगी।
गऊ गीतागायत्री होग्यी तीनों नष्ट जहान मै
कहै लखमीचन्द मुश्किल हो र्या सै जीणा।
भारत का जा सै लुट्या लखीणा
किसा खाणा पीणा बण्या टेठ का, मां तै न्यारा जण्या पेट का
कृष्ण जी पनाह पेट का माणस की जबान मैं[2]

[1]. डॉ॰ पूर्णचन्द शर्मा (सं॰) (पं॰ लखमीचन्द ग्रंथावली), पृ॰ 179

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

इस प्रकार से पंडित लखमीचन्द ने अपने सांगों और रागनियों में विनय और उपासना के पदों की रचना की है। विनय और उपासना के पदों में भवानी मां, महिषामर्दिनी, शिव तथा कृष्ण भगवान की वंदना मिलती है।

ईश्वर महिमा :

पंडित लखमीचन्द के सांगों में ईश्वर महिमा के गुणगान का सुन्दर वर्णन मिलता है। इन्होंने ईश्वर को इस सृष्टि का रचयिता तथा कल्याण करने वाला माना है। ईश्वर बिगड़े कामों को संवारने वाला, मुर्दे में भी जान डालने वाला, राजा को रंक बनाने वाला रंक को राजा बना सकता है। वह सर्वव्यापक है और इस सृष्टि के कण–कण में विद्यमान है और इस सृष्टि का नियामक है:–

हे ईश्वर तू सबके बिगड़े हुए समारै काम।
हरे राम, हरे राम, हरे राम
भली जगांह पै नाश घालदे, मुर्दे मैं भी सांस घालदे।
राजा नै बणवास घालदे, उटादे कष्ट तमाम।
हरे राम, हरे राम, हरे राम
बुद्धि ने तू बना अस्थिर दे, दुःख सुख की बता खबर दे।
एक पल छन मैं करदे, तू प्रभु गोरा काला चाम।
हरे राम, हरे राम, हरे राम
माया रचकै तू खेल खिलादे, दुख सुख दे कै तुरत भुलादे।
तलै गिरादे, स्वर्ग झूलादे, दिखादे सच्चा धाम।
हरे राम, हरे राम, हरे राम
लखमीचंद तै साज दे दिया, एक कंगले तै ताज दे दिया।
हट कै नल तै राज दे दिया है सच्चे घनश्याम

ईश्वर सदा अपने भक्तों के पास रहता है। वह अपने भक्तों को इस जीवन–मरण के बंधन से मुक्ति प्रदान करता है। जब–जब भक्त पर कभी कोई मुसीबत आती है तो ईश्वर अपने भक्त की तुरन्त सहायता के लिए आते हैं। ईश्वर अपने भक्तों में ऊँची–नीची जाति का कोई भेद–भाव नहीं रखते। वे कभी–कभी अपने भक्तों के धैर्य की परीक्षा भी ले लेते हैं। पंडित लखमीचन्द ने अपने एक उपदेशक भजन में ईश्वर महिमा का सुन्दर वर्णन किया है। जो इस प्रकार है :–

हे त्रिलोकी भगवान, पार तनै तारे नर नारी
जो तेरा बणकै दास रहा
कैरों छिक लिए चीर तार कै बैठाग्ये आखिरकार हार कै।
मारकै दुर्योधन का मान, सभा मैं जब द्रौपदी ललकारी,
चीर मैं तू छूपकै खास रहा
जन्म सब दुख मैं काट लिया, भेद तेरा सारा पाट लिया।
डाट लिया सुवे के मैं ध्यान, पार तनै गणका भी तारी,
सोच मैं तेराए बास रहा
तेरा किस–किस नै दर्शन पा लिया, बण सन्यासी शेर सजा लिया।
बचाली मोर ध्वज की ज्यान, भगत नै ना हिम्मत हारी,
इतनै तेरा विश्वास रहा
लखमीचन्द कर ज्ञान शुरु, ज्ञान तै होग्ये पार धुरु।
गुरु नारद तै पा लिया ज्ञान, लात जिसकै मौसी नै मारी।
भगत के तू हरदम पास रहा।'[3]

ईश्वर का भेद आज तक किसी को नहीं पाया। वह सदा अपनी लीलाओं द्वारा जीव को भ्रमाता रहता है। इन्हीं लीलाओं से प्रभावित होकर पंडित जी ने एक भजन में कहा है :–

जड़ चेतन मैं व्यापक हो प्रभु निज पै वास करै है।

---

[2]. डॉ० पूर्णचन्द शर्मा (सं०) (काव्य विविद्या), पृ० 727
[3]. वही, पृ० 726

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

कभी आता कभी जलाता प्रभु क्या तलाश करै है ?
कभी पाणी मैं शील सर्द कभी अग्नि मैं ताता है।
कभी खुशबोई मगन रहै कभी अन्न फल धन खाता है।
कभी सबके सामने जाहिर हो कभी चल्या जाता है।
कभी जन्म लेत कभी नष्ट होत कभी रोवै कभी गाता है।
कभी असुरों से करै लड़ाई कभी ब्रज मै रास करै है ?[4]

गंगा जी की महिमा :

भारतीय संस्कृति में सबसे पवित्र स्थान गंगा का माना गया है। गंगा नदी हमारी माता के समान पूजनीय एवं जीवन दायिनी पवित्र नदी के रूप में याद की जाती है। लोक विश्वास है कि गंगा स्नान करने से उनके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। हरियाणा में गंगा का नाम बड़ी श्रद्धा के साथ लिया जाता है। हमारे समाज में कोई भी शुभ–कार्य का अनुष्ठान किया जाता है तब गंगा जल का होना अति–आवश्यक माना जाता है। बहुत से लोग शपथों में भी 'गंगा का नेम' उठाते हैं और गंगा माई कहकर अपनी श्रद्धा प्रकट करते हैं। इस बात को सार्थक करने के लिए पंडित लखमीचन्द ने इस प्रकार कहा है :–

आये थे हम नहाण गंग पै पाप नी मैं भेगे।[5]

पंडित जी के सांगेतर काव्य में गंगा महिमा का गुणगान पंडित जी ने इस प्रकार किया है :–

गंगा जी निस्तारैगी री मनै शरण लई तेरी आ ?
गंगा जी तेरे घाट पै हिण्डोले दिए री गडा।
राजकौर पटड़ी पै बैठी कृष्ण जी रहे झुला ?
कोए कहै ब्रह्मा की पुत्री, कोए बसुओं की मां
कोए री कहै तू पर्वत तै उतरी तेरा भेद किसे न ना ?
ब्रह्मा विष्णु शिवजी तक रहे तेरा गुणगा।
शक्ति माता गणेश गोद ले तेरे दर्शन को जा[6]

भक्ति एवं वैराग्य :

भक्ति शब्द की व्युत्पत्ति 'भज्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है – सेवा करना या भजना अर्थात् श्रद्धा एवं प्रेम पूर्वक इष्ट देव के प्रति आसक्ति। शांडिल्य सूत्र में भी भक्ति का यही रूप दिया गया है। नारद भक्ति सूत्र में भी भक्ति को प्रेमरूपा और अमृत स्वरूपा कहा गया है।

सच्ची शक्ति से ही मानव मन में वैराग्य का भाव उत्पन्न होता है। जब भक्त को जगत की नश्वरता का ज्ञान हो जाता है तो उसका मन सांसारिक सम्बन्धों से उचट जाता है।

लोकजीवन में सच्ची भक्ति का सर्वोच्च स्थान है। मोक्ष प्राप्ति का इससे सुगम साधन और नहीं है।[7] पंडित लखमीचन्द जी ने बगुला भक्तों की भर्त्सना करते हुए सच्ची भक्ति के महत्त्व को इस प्रकार रेखांकित किया है :–

उठो उठो हे सखी, लगो हरि के भजन मैं
जिन ने हरि की माला टेरी, उन बन्द्या नैं मोक्ष भतेरी
दोनूँ बखतां स्याम सबेरी, एक बार दिन मैं
भगति चीज जगत मैं किसी, इसकी जोत चमकती इसी।
जैसे सप्त ऋषि रहे चमक गगन मैं
सखी भक्ति का ढंग निराला, कहैं उन बन्द्या का मुंह काला।
जिनके हाथ के मैं माला और पाप रहै मन मैं
हे सखी डूब गई पढ गुण कै, फेर तू रोवैगी सिरधुण कै।
लखमीचन्द साज नै सुण के उठैं लोर सी बदन मैं

---

4. वही, पृ० 786
5. डॉ० पूर्णचन्द शर्मा (सं०) (काव्य विविद्या), पृ० 124
6. वही, पृ० 728
7. डॉ० पूर्ण चन्द शर्मा, (लेख) हरिगन्धा पत्रिका, सितम्बर, अक्तूबर–2002

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

निर्गुण–सगुण का वर्णन :

लोक मानस में भक्ति की निर्गुण और सगुण दोनों ही धाराएं प्रवाहमान हैं। मूलतः दोनों का लक्ष्य परम–धाम की प्राप्ति है। हरियाणा के सन्तों ने निर्गुण भक्ति का प्रचार किया है, जबकि अन्य भक्त कवियों ने परमात्मा की सगुण भक्ति के भजन गाए हैं। आचरण की शुद्धता पर दोनों ही धाराओं में विशेष बल दिया है, दोनों में ही माया की स्थिति नकारात्मक स्वीकार की गई है। गुरु की उपस्थिति दोनों में ही निर्विवाद रूप से मानी गई है क्योंकि वही माया से भ्रमित जीव को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करता है। पंडित लखमीचन्द जी ने निर्गुण और सगुण को एक ही माना है। वस्तुतः पारब्रह्म परमेश्वर अनिवर्चनीय है, उनके गुणों का कोई आर–पार नहीं है। यहाँ वेद–शास्त्र भी उस परम सत्ता का सम्यक् विवेचन करने में अक्षम रहे हैं।[8]

निर्गुण हैं अलख नाम सरगुण मैं अनन्त हों सैं।
निर्गुण सरगुण सम इनके ना आदि ना अन्त हों सैं।
हरि के हजार नाम किरसन के करोड़ भाई।
औरां न बतावै तेरी झूठी है मरोड़ भाई।
उस ईश्वर के नाम गिणाते यें नुगरयां के जोड़ भाई।
शेष महेश गणेश विधि तक कोन्या पाया ओड़–भाई।
'नेति–नेति' वेद पुकारैं ये अगम–निगम के तन्त हों सैं।[9]

भजन का महत्त्व :

आवागमन के चक्र से मुक्ति पाने के लिए पंडित जी ने भक्ति और अच्छे कर्मों को मार्ग बताया है। उनका विश्वास है कि भजन के बिना यश की प्राप्ति नहीं हो सकती। ईश्वर भजन ही हर प्राणी के लिए मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है।

जो लोग सच्चे मन से हरि का भजन करते हैं, वे निश्चय ही परब्रह्म में लीन हो जाते हैं। एक भजन में हरि भजन के महत्त्व को इस प्रकार से व्यक्त किया है :–

बन्दे कर ले भजन हरी का दिल नै खोल कै जी ३
एक–धुरु भक्त हो लिया, जिसने दिल का दाग धो लिया।
बच्चेपण मैं राह टोह लिया, बण मैं डोल कै जी
दधिचि था ब्रह्मा का जाया, जिसनै ऋषियों का प्रण पुगाया।
अपणी राम नाम पे काया दे दी छोल कै जी

अतः सांसारिक सुख भोग लेने के बाद तो मनुष्य को अश्वमेव हरि भजन में लीन हो जाना चाहिए। यदि जीवन के अन्तिम चरण में भी वह राम रसायन नहीं चख पाया जो फिर सिर धुन–धुन कर पछताएगा। इसके अनुसार हरिभजन के बिना मनुष्य का जीवन बेकार है :–

भजन बिन बन्दे का नहीं जस का
तृष्णा दूर गई ना खेदी, जिसनै कुबध करी उसनै सेधी।
वो त्रिलोकी भेदी बन्दे तेरी नश का
मतना रूप देख कै जी ले, इब जख्म जिगर के सी ले।
अमृत कर पीले प्याला प्रेम रस का

प्रभु भजन की एक ऐसा सहारा है जो मनुष्य की मृत्यु के बाद भी काम आता है। पंडित जी ने अपने एक भजन में प्रभु भजन का सुन्दर वर्णन किया है :–

भूल का ताला पड़ै टूट कै ब्रह्मज्ञान लागै तै
रट घट बीच श्याम मुंरारी जै तदबीर लागज्या।
भजन बिना इन हाथ पायों कै सख्त जंजीर लागज्या

इस प्रकार से इस भजन में यह बताया गया है कि प्रभु भजन के बिना मृत्यु उपरांत यम के दूत सख्त जंजीरों से बाँध देते हैं। प्रभु भजन ही एक ऐसा उपाय है जो जीवन–मरण के चक्कर से छुटकारा दिलवा सकता है तथा मोक्ष–प्राप्ति करवा सकता है।

---

[8]. डॉ० पूर्णचन्द शर्मा, (लेख) हरिगन्धा पत्रिका, सितम्बर, अक्तूबर 2002
[9]. डॉ० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रंथावली, (काव्य विविद्या) पृ० 734

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

पंडित लखमीचन्द अपने एक उपदेशक भजन में मनुष्य को समझाते हैं कि ओंकार के भजन के बिना तेरी जिंदगी व्यर्थ है, जो नाशवान है। भजन के बिना यह जीवन वासना के चक्कर में यूंही तंग होता रहेगा। भजन के बिना ही राजा से रंक बन गए। काल ने सभी को खा लिया परन्तु भगवान की प्राप्ति उसी को हुई है जिसने अपना ध्यान हरि भजन में लगा लिया है :–

ओम् भजन बिना जिन्दगी वृथाए गई।
ना रही, ना रहै, किसै की सदा ना रही
ओम् ब्रह्म निराकार की मूर्ति, भजन बिन ज्यान वासना मैं झुरति।
जिनकी सुरती भजन मैं वो फिदा ना रही
जिनके दुनियां मैं हुकम पिलैं थे, कदे प्रण तै नहीं हिलैं थे।
जिनके चक्र चलैं थे वो अदा ना रही
उधड़ग्यी गढ़ कोटां की नीम, काल कै ना लगते वैद्य हकीम।
राजा भीम सरीखे की वो गदा ना रही
लखमीचन्द वेद का लेख, सृष्टि ज्ञान ध्यान से देख
जिन की लगी रेख मैं मेख वो जुदा न रही

माया का विरोध :

पंडित लखमीचन्द जी ने भी अन्य संत कवियों के समान ही जीव को विषय–वासनाओं पंचविकारों, मद, लोभ, मोह, माया, तृष्णा से दूर रहने का उपदेश दिया है :–

इस मोह माया तृष्णा के बस मैं या फंसगी ज्यान झमेले मैं।
बाजीगर की बाजी बांसुरी गंगा जी के मेले मैं
उस बाजीगर नै मनत्र पढ़ एक ऐसा खेल रचाया जी।
जल पै थल और थल पै सृष्टि अद्भुत उसकी माया जी।
उस बाजीगर नै मन्त्र पढ़कर ऐसा बिरवा लाया जी।
उस बिखे मैं बास करै और रग–रग बीच समाया जी।
वायु से अग्नि तेज जल है इलम इसम अकेले मैं

पंडित जी माया को उस सर्वव्यापक की देन मानते हैं। एक अन्य भजन में पंडित जी ने माया के प्रभाव का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है:–

जगत मैं मोह लिए मेहर सुमेर जी माया नै बहुत घणे मारे हैं
ब्रह्मा विष्णु शिवजी मोहे भष्मासुर का नाश किया।
चन्द्रमा कै स्याही लाद्यी इन्द्र नै भी भोगे त्रास।
नारद कैसे ऋषि मोहे मरकट रूप धारया खास।
भृगु चमन यमदग्नि उद्दालक की भी मारी मति।
त्रिशंकू और नहुष मोहे उनकी करी बुरी गति
बड़े–बड़े ऋषि मोहे इसमैं नहीं झूठ रत्ति
वो नहुष दिया स्वर्ग तै गेर जी माया के कपट न्यारे हैं

माया के चक्कर में पड़ने से घर के घर, भरे–पूरे गांव, बड़े–बड़े देश नष्ट हो गए हैं। पंडित लखमीचन्द ने अपने एक भजन में माया से भ्रष्ट पुरुषों का सुन्दर वर्णन किया है जो इस प्रकार निम्नलिखित हैं :–

अर्जुन योद्धा भीम बली पांडवों मैं अणी मोड़
दोनों कुटुम्ब कट–कट मरग्ये राजपाट गए छोड़।
ऐसे रहे नहीं जिनकै बल का नहीं ओड़।
बड़े–बड़े आए गए नाम और निशान नहीं।
धन माया भी धरी रहग्यी महल और मकान नहीं।
सब मेरी–मेरी करते फिरैं मूर्खों को ज्ञान नहीं
लखमीचन्द काल के बस मैं आकै नै सब धिरग्ये।[10]

माया के चक्कर से ऋषि मुनि भी नहीं बचे पंडित जी ने अपने काव्य में इसका उदाहरण इस प्रकार से दिया है :–

---

[10]. वही, पृ० 755

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

कहीं नीर मैं गले, अग्नि मैं जले, कहीं जोगी बण कै जोग लिया।
हम आए थे भोग भागने हम को भोगों ने भोग लिय।
कहीं खाट मैं पड़े रहे कहीं रोगी बणकै रोग लिया।
कहीं खुशियों मैं मग्नरहे कहीं शोगी बणकै शोग लिया।
इस माया के चक्कर मैं आ कै ऋषि अपणा जन्म विचार गए।[11]

इस प्रकार से लखमीचन्द जी जीव को सावधान करते हुए कहते हैं कि तू राम नाम का भजन कर। तू माया के भ्रम में क्यों पड़ा है। प्राण निकलते ही तुझे छोड़ देंगे। तेरा शरीर अग्नि को समर्पित कर दिया जाएगा। यह सब माया झूठी है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आधुनिक युग में भी रचना का मूल उद्देश्य धार्मिकता है, इसी सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए पंडित लखमीचंद के सांगों में विनय और उपासना का बड़ा वर्णन है। इनके सांगों और रागनियों के कथ्य के आयाम ईश्वर उपासना, गऊ का महत्त्व, भक्ति और वैराग्य, धर्म नीति, गंगा महिमा तथा निर्गुण–सगुण का वर्णन आदि हैं। इनमें से कुछ भजनों का कथ्य सामाजिक आडम्बरों का विरोध है तथा कुछ भजनों में दिन–प्रतिदिन पतनोन्मुखी समाज की विभिन्न बुराइयों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। इन सभी रचनाओं में प्रायः कवि का दृष्टि कोण अत्यन्त विशद् एवं विशाल रहा है। कवि ने अपने सांगों में सर्वत्र परस्पर प्रेम और भाई–चारे का संदेश दिया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ॰ कुन्दनलाल उप्रेती : लोक साहित्य के प्रतिमान
2. डॉ॰ कुंवरचन्द्र प्रकाश सिंह : हिन्दी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा, 1964
3. कृष्ण चन्द्र शर्मा : हरियाणा के कवि सूर्य लखमीचन्द, हरियाणा पब्लिकेशन, 1981
4. डॉ॰ कृष्ण चन्द्र शर्मा : लोककवि अहमद बख्श और उनकी रामायण सूर्यभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 6
5. श्रीकृष्ण दास : लोकगीतों की सामाजिक व्यवस्था, साहित्य भवन लि॰ इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1956
6. डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय : लोकसाहित्य की भूमिका, साहित्य भवन, प्रा॰ लि॰ इलाहाबाद, प्र॰ सा॰, 1957
7. डॉ॰ कृष्णदेव शर्मा : भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र
8. डॉ॰ केशो राम शर्मा : गन्धर्व पुरुष लखमीचन्द, निर्मल प्रकाशन, दिल्ली, प्र॰ सं॰ 2017 वि॰ सं॰
9. के॰ सी॰ यादव : हरियाणा प्रदेश का इतिहास, मनोहर पब्लिकेशन, अंसारी रोड़, दिल्ली, प्र॰ सं॰ 1981
10. के॰ सी॰ यादव, हरियाणा का इतिहास एवं संस्कृति, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, 1986

[11]. डॉ॰ पूर्णचन्द शर्मा (सं॰) पं॰ लखमीचन्द ग्रन्थावली (काव्य विविद्या), पृ॰ 757

© RRIJM 2015, All Rights Reserved